ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 13 अंक 1 जनवरी-फरवरी 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

महर्षि अरविन्द का शिक्षा दर्शन—डॉ० भगवती पौड्; मोनिका 3234

भूमण्डलीकरण के दौर में सामाजिक न्याय की अवधारणा एवं भारतीय राजनीतिक व्यवस्था का बदलता स्वरूप: एक विश्लेषण—डॉ० प्रकाश इमाम 3236

नाटकों के स्त्रियों में प्रेम के अनुशीलन—डॉ० कुसुम सिंह; दिनेश कुमार पटेल 3240

औरतें हम भी तो जाएँ : पितृसत्ता की पीड़ा से मुक्ति के प्रयास—दीपा 3242

वर्तमान परिस्थिति: आर्थिक परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की बदलती भूमिका—डॉ० अनिता यादव 3245

जलवायु परिवर्तन: राजस्थान के संदर्भ में—डॉ० बबीता 3253

समकालीन में वर्णित पात्रकर्ताओं का विवेचन—डॉ० समय सिंह मीना 3255

हिन्द महासागर क्षेत्र में भारत के सामुद्रिक चुनौतियां एवं विकल्प—राजीव रंजन कुमार 3259

कोविड का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव: एक आलोचनात्मक अध्ययन—डॉ० मनोज कुमार अग्रवाल 3262

नरेन्द्र के समकालीन कथाकारों की कथा-साहित्य में जीवन-मूल्य—सुशील हिमांशु कर्णवाल; प्रो० (डॉ०) शिव कुमार प्रसाद 3267

कल्याण का जीवन-वृत्त—विवेक कुमार रजक; प्रो० (डॉ०) दिनेश प्रसाद कमल 3270

शिक्षा, कौशल और युवा छात्रों के बीच उनकी व्यावसायिक आकांक्षा के संबंध का एक अध्ययन—तुलसी कार; डॉ० संजीव कुमार 3275

भारत – अमेरिका संबंध—डॉ० हर्मेन्द्र प्रताप सिंह 3279

भारत में महिलाओं के विरुद्ध बढ़ते अपराधों के कारण: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन—नितिन कुमार; डॉ० संध्या तिवारी 3282

राष्ट्र निर्माण में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवकों का योगदान—मीना कंवर; डॉ० राम सेवक रमन 3285

मानव जीवन एवं वनस्पतियों से टूटता नाता—डॉ० राजेश कुमार पाल; अमित कुमार सिंह 3288

राजनीति में महिला प्रतिनिधित्व एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि: राजस्थान की चौदहवीं विधानसभा का एक अनुभवमूलक अध्ययन—कानूराम काहत 3290

'मधुमेह' रोग में आवश्यक चिकित्सकीय परीक्षण का अध्ययन—नन्दन सिंह यादव 3294

डॉ० यादव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व: एक विवेचना—मुकेश कुमारी 3297

हरियाणा विधानसभा चुनाव 2019 के जनादेश का विश्लेषणात्मक अध्ययन—आशा रानी 3300

'भक्तिकाल' और 'नयी कविता' के संदर्भ में नामवर सिंह और मुक्तिबोध का आलोचनात्मक चिंतन
—डॉ० राकेश कुमार यादव; डॉ चन्द्र प्रकाश यादव 3302

वर्तमान समय की चिंतित करती कहानियाँ—वंदना पाण्डेय; डॉ० विश्वजीत कुमार मिश्र 3305

संस्कृत-साहित्य में मार्कण्डेय की उद्भावना एवं कृतियों के महाकाव्य—पिंकी मिश्रा 3308

कालिम्पोंग के ग्रामीण कृषकों में ऋणग्रस्तता का अध्ययन—डॉ० मदन शर्मा सारस्वत; अल्का हटुमेन 3311

भारतीय राजनीति में अटल बिहारी वाजपेई का योगदान—उदय भान द्विवेदी; डॉ० इफ्तिखार अहमद अंसारी 3314

उपन्यास 'दुक्कू दरबार' का समीक्षात्मक अनुशीलन—डॉ० हिमांशु कुमार 3318

वैज्ञानिक सृजनात्मकता के संदर्भ में परम्परागत शिक्षण विधि के सापेक्ष आगमन चिंतन प्रतिमान की प्रभावशीलता का अध्ययन
—डॉ० सरोज जैन; विन्देश्वरी प्रसाद सिंह 3321

भारत में ग्रामीण विकास योजनाओं पर एक अध्ययन—मनजीत सिंह 3325

हिन्दी भाषा का वैश्विक स्वरूप—रीता रानी 3330

"किशोरावस्था के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन"—नेहा श्रीवास्तव 3334

बिखरते परिवार तथा टूटती मान्यताएँ: नौकरी-पेशा, माता-पिता और बच्चों की देखभाल एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन
—डॉ० अतुल कुमार मिश्र; डॉ० निखिल विक्रम सिंह 3339

सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन
—आशुतोष कुमार दुबे; डॉ० (श्रीमती) मधुबाला राय 3343

कोविड महामारी का भारत में रोजगार पर प्रभाव एवं सुझाव—डॉ० प्रशांत अग्रवाल 3347

प्राथमिक शिक्षकों के व्यावसायिक प्रतिबद्धता का तुलनात्मक अध्ययन—राघवेन्द्र वीर सिंह; डॉ० अखिलेश चन्द 3350

आजमगढ़ जनपद के प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के पर्यावरणीय मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन—रेनू देवी; डॉ० अखिलेश चन्द 3354

राजनीति में महिला प्रतिनिधित्व एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि: राजस्थान की चौहदवी विधानसभा का एक अनुभवमूलक अध्ययन

बालूदान बारहठ

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, सुखाड़िया वि.वि. उदयपुर

सारांश-

भारत के कुल मतदाताओं का करीब आधा हिस्सा महिलाओं का है लेकि विधायिका में उनकी संख्या इस अनुरूप नहीं रही है। न केवल संसद में अपितु राज्यों की विधायिका में भी यही दृश्य उभर कर आ रहा है। प्रस्तुत शोध राजस्थान की चौदवी विधानसभा में महिला सहभागिता में उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि की पारम्परिकता पर आधारि है। साथ ही सन्दर्भवश संसद में महिला प्रतिनिधित्व, अब तक की महिलाओं की सहभागिता, पंचायती राज आदि विषयों पर भी प्रकाश डाला गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अभी भी अधिकांश महिलाओं को अवसर उनकी पारिवारिक राजनैतिक पृष्ठभूमि से ही प्राप्त हो रहा है। लेकिन उदाहरण आशा की किरण भी जगाने वाले है।

संकेत शब्द- सांसद, महिला विधायक, आरक्षण, विधानसभा, पारिवारिक पृष्ठभूमि, पंचायती राज

विश्व का राजनीतिक इतिहास इस बात का प्रमाण है कि महिलाओं को मताधिकार प्राप्त करने के लिए लंबा संघर्ष करना पड़ा। ब्रिटेन व USA जैसे देश भी बीसवी सदी में जाकर महिलाओं को मत का अधिकार देने को तैयार हुए थे लेकिन भारत ने अपनी स्वाधीनता के साथ ही बिना किसी संघर्ष के महिलाओं को न केवल मताधिकार अपितु निर्वाचित होने का भी अधिकार दिया। यह बहुत बड़ी राजनीतिक क्रांति थी क्योंकि महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता का तो अभाव था ही, साक्षरता दर भी दस प्रतिशत से कम थी। रूढ़िवादिता का स्तर यह था कि स्वाधीन भारत की पहली मतदाता सूची में लाखों महिलाओं के नाम केवल इसलिए शामिल नहीं हो पाये क्योंकि उन्होंने मतदान-कर्मिकों के सामने अपने पति का नाम नहीं बताया। अनेक संवैधानिक प्रावधानों व राजनीतिक-संरक्षणों के परिणाम स्वरूप स्थिति में तेजी से सकारात्मक परिवर्तन दिखाई दिया। आज मतदाताओं की कुल संख्या की दृष्टि से देखा जाए तो पूरे देश के कुल मतदाताओं में से करीब 47 प्रतिशत महिला मतदाता है। यही नहीं 2019 लोकसभा में हुए चुनावों में पुरूष मतदान प्रतिशत की तुलना में महिला मतदान का प्रतिशत अधिक रहा है। लेकिन विधायिका में प्रतिनिधित्व के स्तर पर महिलाओं की संख्या अत्यन्त सीमित हो जाती है।

लोकसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व देखा जाए तो वर्तमान सत्रहवीं लोकसभा में 14.36 प्रतिशत सांसद महिलाएं है[1] जो अब तक की सर्वाधिक संख्या है। पहली लोकसभा में 4.41 प्रतिशत[2] की तुलना में यह तीन गुणा से भी अधिक है लेकिन कुल महिला मतदाताओं के अनुपात में देखे तो यह एक तिहाई से भी कम है। इसी तरह राजस्थान विधानसभा में महिला प्रतिनिधित्व की बात करें तो 1952 में जब पहली विधानसभा के चुनाव हुए तब कुल चार महिला प्रत्याशियों ने भाग लिया परन्तु कोई भी महिला निर्वाचित नहीं हो पायी थी। नवंबर 1953 में उपचुनाव में बांसवाड़ा से श्रीमती यशोदा देवी निर्वाचित हुई जिन्हें राजस्थान की पहली महिला विधायक होने का गौरव प्राप्त है। जून 1954 में श्रीमती कमला बेनिवाल दूसरी महिला विधायक के रूप में चुनी गई।[3] पहली विधानसभा में दो महिला विधायकों की तुलना में चौदहवीं विधानसभा में कुल 29 महिला विधायक निर्वाचित हुई जो अब तक की सर्वाधिक संख्या है। यह सदन की कुल सदस्य संख्या का करीब 15 प्रतिशत है। 14वीं विधानसभा में कुल महिला प्रत्याशियों की संख्या 166 थी जिनमें से अधिकांश का निर्दलीय प्रत्याशी होना महिलाओं की बढ़ती राजनीतिक सहभागिता को प्रदर्शित करता है। यद्यपि अब तक जैसलमेर एकमात्र ऐसा जिला रहा है जहां से अभी तक कोई महिला विधायक नहीं चुनी गई है[4] अतः यह देखना रोचक होगा कि इन 166 प्रत्याशियों में से जो 29 विधायक-निर्वाचित हुई उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि क्या रही है? उनकी निर्वाचकता की बारम्बारता क्या रही है और उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि ने उनको अवसर प्रदान करने अथवा विधायक के रूप में कामकाज में क्या भूमिका निभाई है।

राजस्थान में 14वीं विधानसभा हेतु दिसंबर 2013 में चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें कुल 28 महिला विधायक निर्वाचित हुई तथा बाद में धौलपुर उपचुनाव में चुने जाने से महिला विधायकों की संख्या 29 हो गई थी।[5] दलीय स्थिति के आधार पर देखा जाये तो सबसे ज्यादा भारतीय जनता पार्टी से कुल 23 महिला विधायक चुनी गई। जिलेवार प्रतिनिधित्व को देखे तो स्पष्ट होता है कि सबसे ज्यादा श्रीगंगानगर जिले से 3 महिला विधायक चुनी गई, जबकि 6 जिले ऐसे है जिनमें से दो-दो महिला विधायक निर्वाचित हुई है। कुल 33 में से 21 जिलो से विधानसभा में महिला प्रतिनिधित्व रहा है[6] महिला विधायकों की बारम्बारता का मूल्यांकन करने पर स्पष्ट होता है कि 17 विधायक ऐसी थी जो प्रथम बार निर्वाचित हुई थी जबकि दो बार निर्वाचित होने वाली विधायकों की संख्या आठ रही है। चार विधायक ऐसी थी जो तीन या तीन से अधिक बार विधायक के रूप में चुनी गई है, जिनमें से श्रीमती कृष्णेंद्र कौर व श्रीमती सूर्यकांता व्यास चार चार बार विधायक के रूप में निर्वाचित होकर सदन में पहुंची है।[7]

साहित्य समीक्षा

कुमारी डबरी व अग्रवाल सीमा, "महिला नेतृत्व एवं राजनीतिक सहभागिता"[10] पुस्तक महिलाओं के कल्याण हेतु जो संवैधानिक प्रावधान है उन पर प्रकाश डालते हुए इस बात की समीक्षा करती है कि उन प्रावधानों की जमीनी वास्तविकता क्या है। मुख्यतः पुस्तक राजस्थान की 10वीं 11वीं एवं 12वीं विधानसभा के लिए निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की विधानसभा में भूमिका की तुलनात्मक व्याख्या करती है।

... "पंचायती राज में महिलाएं" इस पुस्तक में पंचायती राज में महिला आरक्षण का संपूर्ण मूल्यांकन किया गया है कि राजस्थान जैसे परम्परागत राज्य में महिला आरक्षण ने किस तरह से एक राजनीतिक क्रांति पैदा की है। पुस्तक इस बात को भी इंगित करती है कि महिलाओं कम ने शैक्षिक योग्यताओं के बावजूद परिवार व राजनीति के मध्य किस तरह संतुलन कर अपनी कार्यकुशलता दिखाई है। साथ ही साथ महिलाओं के समक्ष आ रही व्यावहारिक कठिनाईयों को भी पुस्तक में स्थान दिया गया है।

... "राजस्थान में तेरहवीं विधानसभा में महिलाओं की भूमिका"[11] इसमें राजस्थान में 13वीं विधानसभा चुनावों में महिलाओं की भागीदारी का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। साथ ही राज्य की प्रथम महिला मुख्यमंत्री द्वारा महिलाओं हेतु चलाई गई विभिन्न योजनाओं एवं विकास कार्यों पर भी दृष्टि डाली गई है।

... शर्मा, राजस्थान की राजनीति में महिलाएं (राजस्थान विधानसभा के विशेष संदर्भ में)[12] लेखक ने प्रथम विधानसभा से 14 वीं विधानसभा तक महिला प्रतिनिधित्व की समीक्षा की है जिसमें उनकी संख्या के साथ-साथ सदन में सक्रियता को भी शामिल किया है।

उद्देश्य -

इस शोध कार्य का उद्देश्य राजनीति में महिला सहभागिता पर उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन करना है। साथ ही उनकी राजनीतिक सक्रियता के स्तर को ज्ञात करना भी है।

पद्धति-

शोध के उद्देश्यों को मध्यनजर रखते हुए प्रश्नावली का निर्माण किया गया जिसके माध्यम से राजस्थान की 14वीं विधानसभा की सभी महिला विधायकों से शोध से संबंधित सामग्री का संकलन किया गया। साथ ही द्वितीयक स्रोतों के रूप में अनेक संदर्भ ग्रंथों का भी उपयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र-

यह शोध राजस्थान की विधानसभा से संबंधित है अतः अध्ययन क्षेत्र के रूप में संपूर्ण राजस्थान को लिया गया है।

राजनीतिक संस्कृति व राजनीतिक सहभागिता को प्रभावित करने वाले अनेक घटक होते है जिसमें परिवार, शिक्षण संस्थाएं, रीति-रिवाज आदि शामिल है। ... महिला विधायकों की पृष्ठभूमि पर दृष्टिपात करें तो स्पष्ट ही है कि ... इन 29 विधायकों में से 5 विधायक राज परिवार से संबंध रखती है जिनमें श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया, श्रीमती कृष्णेन्द्र कौर, सुश्री सिद्धी कुमारी, सुश्री कीर्ति कुमारी एवं श्रीमती दिया कुमारी शामिल है। स्वाभाविक है, इनको राजनीतिक रूप से बने रहने के गुण व अभिरूचि विरासत से प्राप्त हुई है। वसुंधरा राजे सिंधिया के बारे में देखा जाये तो वह न केवल ग्वालियर राजघराने से रही है अपितु उनकी मां स्वर्गीय विजयराजे भाजपा के शीर्ष नेतृत्व में शामिल रही है। स्वयं वसुंधरा मुख्यमंत्री पद तक पहुंचने से पूर्व पांच बार लोकसभा की सदस्य निर्वाचित हुई थी, केन्द्र सरकार में मंत्री के रूप में कार्य का अवसर भी रहा था। संगठन में कार्य के नाते भारतीय जनता युवा मोर्चा, भाजपा महिला मोर्चा, राष्ट्रीय महासचिव व प्रदेश अध्यक्ष के रूप में कार्य करने का लंबा अनुभव रहा है। कृष्णेन्द्र कौर न केवल भरतपुर राजपरिवार से है अपितु परिवार की राजनीतिक पृष्ठभूमि भी रही है। चाचा मानसिंह व भाई विश्वेन्द्र सिंह की लंबी राजनीतिक पृष्ठभूमि रही है। साथ ही स्वयं कृष्णेन्द्र कौर इससे पूर्व भी चार बार विधायक रहने के अलावा अन्य कई राजनीतिक जिम्मेदारियों का निर्वहन कर चुकी है।

इसी तरह सिद्धि कुमारी का संबंध बीकानेर राजघराने से रहा है। राजपरिवार के विभिन्न ट्रस्टों के माध्यम से समाजसेवा की पृष्ठभूमि वाली सिद्धिकुमारी के परिवार में इससे पूर्व दादा करणी सिंह ने पांच बार लोकसभा में बीकानेर का प्रतिनिधित्व किया था। इस तरह राजपरिवार व राजनीतिक दोनों प्रकार की पृष्ठभूमि सिद्धि कुमारी के लिए उपयोगी रही है।

कीर्ति कुमारी का संबंध बिजौलिया राजघराने से है। इनके पिता चन्द्रवीर सिंह 1971 में माण्डलगढ़ से निर्दलीय चुनाव लड़ चुके थे तथा दादा केसरी सिंह ... वर्षों तक गायत्री परिवार से जुड़े रहे। इस पृष्ठभूमि का उन्हें लाभ तो मिला लेकिन उन्होंने अपनी लम्बी सक्रियता से ही विधायक तक का सफर पूरा किया है। पार्टी की ओर से वह जिला परिषद सदस्य, कृषि मण्डी अध्यक्ष रही, 13 वीं विधानसभा हेतु माण्डलगढ़ के प्रथम विधायक रही है। ... संगठनात्मक स्तर पर वह भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष व प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य रही है।

श्रीमती दिया कुमारी का संबंध जयपुर राजघराने से रहा है। राजपरिवार के अनेक ट्रस्टों से जुड़ी रही दिया को 2013 में भाजपा ज्वाइन करते ही चुनाव लड़ने का अवसर प्राप्त हो गया था। इनके पिता ब्रिगेडियर भवानी सिंह ... ब्रूनेई में भारत के अम्बेसडर रहे व दादी गायत्री देवी जयपुर से न केवल सांसद रही अपितु आपातकाल विरोधी आंदोलन की प्रतीक भी रही है। इस तरह से राजपरिवार व राजनीतिक पृष्ठभूमि दोनों ने दिया के लिए पृष्ठभूमि का कार्य किया जिसके आधार पर वह राजनीति में सहजता से प्रवेश कर पायी।

इसी तरह 29 विधायकों में से 12 विधायक अनुसूचित जाति वर्ग से है।[13] इनमें से श्रीमती अनिता भदेल इससे पूर्व दो बार विधायक रहने के अलावा ... भाजपा महिला मोर्चा से सक्रिय रहने के साथ ही RSS के संगठन सेवा भारती की सभापति भी रही है। संगठनात्मक स्तर पर वह प्रदेश व राष्ट्रीय स्तर पर ...

भाजों की भी वर्षों तक प्रकल्प प्रमुख रही है। अध्ययन से स्पष्ट है कि श्रीमती अनिता के परिवार की कोई राजनीतिक पृष्ठभूमि नहीं रही है। इसी भाँति श्रीमती अमृता मेघवाल इससे पूर्व जिला परिषद् सदस्य रही है तथा अपनी पार्टी के महिला मोर्चा की पदाधिकारी रही है। लेकिन अपने पति की राजनीतिक सक्रियता ने भी इन्हें अवसर देने में भूमिका निभाई है। श्रीमती कमला मेघवाल विधायक बनने से पूर्व प.स. सदस्य प्रधान, जिला परिषद् सदस्य आदि के रूप में कार्य कर चुकि थी। संगठनात्मक स्तर पर पार्टी की जिला इकाई में भी कार्य कर चुकी थी। साथ ही वह सामाजिक स्तर पर भी सक्रिय होकर समाज की जिला अध्यक्ष भी रही है। इस तरह कमला मेघवाल बिना किसी पारिवारिक राजनीतिक पृष्ठभूमि के विधानसभा में पहुंचने में सफल रही है। श्रीमती गीता वर्मा 14वीं विधानसभा में पहली बार विधायक के रूप में पहुंची है लेकिन इससे पूर्व प्रधान रह चुकी है साथ ही परिवार की लंबे समय से राजनीतिक सक्रियता का भी फायदा उन्हें प्राप्त हुआ है। इसी भांति श्रीमती शिमला बावरी भी पहली बार विधायक बनने में सफल रही लेकिन परिवार की कोई राजनीतिक पृष्ठभूमि नहीं रही है। वह स्वयं अपने दल के संगठन में मण्डल से लेकर प्रदेश कार्यकारिणी तक विभिन्न पदों पर कार्य कर चुकी है।

श्रीमती संजना आगरी इससे पहले न केवल 13वीं विधानसभा की भी सदस्य रही अपितु अपने दल में मण्डल से लेकर जिला स्तर तक सक्रिय रही है। साथ ही, अपने समाज के संगठन में भी सक्रिय रही है। साथ ही इनके पति भी लंबे समय से राजनीति में सक्रिय रहे है। श्रीमती सोना देवी बावरी कदाचित एकमात्र ऐसी महिला विधायक है जिनकी न स्वयं की कोई राजनीतिक पृष्ठभूमि रही तथा न ही परिवार की राजनीतिक पृष्ठभूमि। स्थानीय स्तर पर के समीकरणों ने उन्हें विधानसभा में पहुंचने का अवसर दिया। डॉ. मंजू बाघमार ने भी परिवार की किसी राजनीतिक पृष्ठभूमि के बिना ही विधानसभा तक का सफर पूरा किया है। इससे पूर्व अकादमिक गतिविधियों के साथ-साथ अपने दल में लंबे समय से सक्रिय रही है। इसी तरह श्रीमती राजकुमारी के दादाजी के ग्राम स्तर की राजनीति में सक्रियता के अलावा कोई विशेष राजनीतिक पृष्ठभूमि नहीं रही अपितु लगभग 15 वर्षों से अपनी पार्टी के संगठन में जिला स्तर से लेकर प्रदेश स्तर तक विभिन्न भूमिकाओं का निर्वहन कर विधानसभा में पहुंचने में सफल रही। इसी भांति श्रीमती रानी सिलौटिया भी बिना किसी पारिवारिक राजनीतिक पृष्ठभूमि के विधानसभा तक पहुंचने में सफल रही है। श्रीमती चन्द्रकांता मेघवाल के पीहर व ससुराल दोनों पक्षों की राजनीति में सिरकत सक्रिय रही है। साथ ही वह स्वयं भी इसके पूर्व 13वीं विधानसभा सदस्य व जिला परिषद् सदस्य के साथ-साथ अपनी पार्टी में भी विभिन्न पदों पर रह चुकी थी। इसी तरह श्रीमती द्रोपदी ने भी लंबे समय तक विभिन्न भूमिकाओं का निर्वहन करते हुए विधायक तक की यात्रा पूर्ण की है।

इसी तरह 14वीं विधानसभा में तीन महिला विधायक अनुसूचित जनजाति वर्ग से निर्वाचित होकर आयी थी। इनमें श्रीमती अंजुरेखी धानका इससे पूर्व 13वीं विधानसभा की सदस्य भी रह चुकी है। पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में देखा जाये तो इनके पिता राष्ट्रीय स्तर की राजनीति में लंबे समय तक सक्रिय रहे है जिसका लाभ इन्हें भी प्राप्त हुआ है। श्रीमती गोलमादेवी न केवल 13वीं विधानसभा में भी सदस्य रही है अपितु म.प. की सदस्य भी रही है लेकिन इन्हें अपने पति की राजनीतिक सक्रियता के कारण ही यह अवसर मिल पाया था। इसी भांति श्रीमती अनिता कटारा भी पहली बार ही विधायक बनी जिसका श्रेय भी उनके श्वसुर की राजनीतिक सक्रियता को ही जाता है। इस तरह स्पष्ट है कि अनुसूचित जनजाति की तीनों विधायकों के परिवार की राजनीतिक पृष्ठभूमि रही है।

राजपरिवार, अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति की महिला विधायकों के अलावा अन्य महिला विधायकों की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालने से स्पष्ट हो रहा है कि श्रीमती अनिता सिंह जो इससे पहले 13वीं विधानसभा की सदस्य रहने के साथ-साथ जिला प्रमुख व पार्टी के विभिन्न पदों पर भी रही है लेकिन चाचा व पति की राजनीतिक पृष्ठभूमि भी सहायक रही है। इसी भांति श्रीमती अलका सिंह विधानसभा में आने से पूर्व जिला परिषद् सदस्य व पार्टी के विभिन्न पदों पर कार्य किया है। लेकिन श्रीमती अलका को अपने पति की लंबी राजनीतिक सहभागिता का भी बड़ा लाभ प्राप्त हुआ है। श्रीमती कामिनी जिन्दल की न स्वयं की लंबी राजनीतिक सक्रियता रही और न ही परिवार की अपितु स्थानीय समीकरणों ने विधानसभा तक की उनकी राह आसान कर दी थी। श्रीमती किरण माहेश्वरी का 14वीं विधानसभा में आने से पूर्व लंबा राजनीतिक व सार्वजनिक जीवन रहा है। इससे पूर्व वह लोकसभा व विधानसभा की सदस्य व नगर परिषद् सभापति रह चुकी थी। साथ ही वह अपनी पार्टी में जिला स्तर से राष्ट्रीय स्तर की भूमिकाओं का निर्वहन करने के अलावा समाज के विभिन्न संगठनों में भी सक्रिय रही। इस तरह से श्रीमती किरण ने बिना राजनीतिक पृष्ठभूमि के स्वअर्जितमुकाम हासिल किया था। इसी तरह श्रीमती शकुन्तला रावत ने भी विधानसभा में प्रवेश से पहले लंबी राजनीतिक यात्रा पूर्ण कर अपनी क्षमता से मुकाम हासिल किया। पार्षद, जिला परिषद सदस्य के रूप में निर्वाचित होने के साथ ही अपनी पार्टी में जिले से लेकर प्रदेश स्तर तक विभिन्न पदों पर कार्य कर चुकी है। श्रीमती संतोष अहलावत विधानसभा में आने से पूर्व जिला परिषद् सदस्य व प्रधान के रूप में कार्य कर चुकी थी। साथ ही अपनी पार्टी में भी अलग अलग भूमिकाओं में कार्य कर चुकी थी।[16]

श्रीमती सूर्यकांता व्यास को 14वीं विधानसभा से पूर्व लंबा राजनीतिक अनुभव रहा है। इससे पूर्व चार बार विधायक रह चुकी थी। अपनी पार्टी में राष्ट्रीय स्तर तक विभिन्न भूमिकाओं का निर्वहन करने से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक विभिन्न पदों पर कार्य करने के साथ-साथ अन्य अनेक सामाजिक संगठनों में भी निरन्तर सक्रिय रही है। श्रीमती व्यास राज्य में सफल महिला नेतृत्व का एक बड़ा उदाहरण है। श्रीमती सुशीला कामा विधायक बनने से पूर्व जिला प्रमुख भी रह चुकी थी लेकिन पति की राजनीतिक सक्रियता ने इनके लिए आधार का कार्य किया। इसी भांति श्रीमती शोभारानी कुशवाह बिना पूर्व सक्रियता के सीधे विधायक अपने पति की राजनीतिक सक्रियता के परिणामस्वरूप ही बन पायी थी।[17]

उपर्युक्त तथ्यों का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि जहां दो महिला सदस्य सीधी ही विधायक बनी है जबकि अन्य सभी किसी न किसी तरह की आकादमिक गतिविधियों के साथ राजनीतिक क्षेत्र में कार्यरत रही है। कुल महिला विधायकों में से 20 महिला सदस्य पूर्व में राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय रही है जबकि शेष 9 महिला सदस्यों ने विधायक के रूप में निर्वाचन के साथ ही राजनीति में प्रवेश किया है जिसमें से तीन महिला सदस्यों ने 13वीं विधानसभा में निर्वाचन के साथ तथा शेष 6 ने 14वीं विधानसभा के साथ अपनी राजनीतिक यात्रा की शुरूआत की है। इसी तरह जो 15 अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति की महिला विधायक निर्वाचित हुई है, वे सब आरक्षित स्थानों से ही निर्वाचित हुई है। इससे यह स्पष्ट होता है कि राजनीतिक दलों ने सामान्य निर्वाचन क्षेत्रों की तुलना में आरक्षित स्थानों से महिला प्रत्याशियों को वरीयता दी है। जहां तक महिला सदस्यों की शैक्षिक स्थिति का प्रश्न है, अधिकतर उच्च शिक्षित है। 29 महिला सदस्यों में से एक महिला सदस्य एक प्राथमिक स्तर तक तथा एक सैकण्डरी स्तर तक शिक्षित है जबकि तीन महिलाएं

[illegible] तक शिक्षित है। एक महिला सदस्य स्नातक जबकि नौ अन्य स्नातकोत्तर तक शिक्षित है। शेष महिला सदस्यों में से दो पीएच.डी. व एक [illegible] अन्य डिप्लोमा किए हुए है। इससे यह स्पष्ट है कि अधिकांश पारिवारिक राजनीतिक पृष्ठभूमि से होते हुए भी उच्च महिला शिक्षित [illegible] हुए है जो एक शुभ लक्षण है।

[illegible] पृष्ठभूमि का प्रश्न है, पांच महिला विधायकों को राजपरिवार से होने का राजनीतिक लाभ प्राप्त हुआ है जिन्होंने पैतृक [illegible] राजस्थान में पहली से 14वीं विधानसभा तक कुल 108 महिला विधायक चुनी गई है। जिनमें से केवल आठ महिलाएं ही [illegible] सामंतवादी इतिहास वाले राजस्थान के लिए यह संख्या नगण्य ही समझी जानी चाहिए। इन पांच के अलावा शेष महिला सदस्यों [illegible] है जिनके परिवार की राजनीतिक पृष्ठभूमि रही है। इस तरह से देखा जाये तो 29 महिला विधायकों में से 19 विधायक ऐसी [illegible] पृष्ठभूमि का लाभ प्राप्त हुआ है। इनमें से 4 महिला सदस्य ऐसी है जिनके परिवार की राजनीतिक पृष्ठभूमि तो रही है लेकिन स्वयं [illegible] कोई राजनीतिक सक्रियता नहीं रही थी। ऐसी कुल नौ महिला सदस्य है जिन्होंने विधानसभा की सदस्यता के साथ अपनी राजनीतिक [illegible] महिला सदस्य पारिवारिक पृष्ठभूमि के साथ-साथ विधायक बनने से पूर्व भी राजनीतिक रूप से सक्रिय रही है। इस तरह देखा जाये [illegible] में से 10 विधायक ही ऐसी है जिन्होंने बिना राजनीतिक पृष्ठभूमि के अपने कौशल व सूझबूझ से विधानसभा तक की यात्रा पूर्ण [illegible]

[illegible] समाज में दो विधायकों से आरंभ हुई यह यात्रा 29 तक पहुंच चुकी है। आगे के लिए आशा है कि यह संख्या और बढ़ेगी तथा [illegible] को भी पर्याप्त अवसर प्राप्त होंगे जिनके परिवार की कोई राजनीतिक पृष्ठभूमि नहीं है बल्कि वे स्वयं की क्षमताओं से योग्यता से अन्य क्षेत्रों [illegible] राजनीतिक क्षेत्र में भी अपना अपेक्षित प्रतिनिधित्व हासिल करेंगी। ऐसी महिलाएं अपनी विरासत की कैद न होकर सच्चे लोकतंत्र का प्रतिनिधि [illegible] स्थानीय स्वशासन में आरक्षण ने तृणमूल स्तर पर बड़ी संख्या में महिलाओं को स्थान दिया है जिससे एक तरह से प्राथमिक स्तर पर उन्हें राजनीतिक [illegible] कर दिया है। उम्मीद है यह प्रशिक्षण विधानसभा व संसद तक की यात्रा में सहयोगी होकर संस्थाओं के और लोकतंत्रीकरण को संभव [illegible] देश की महिला केवल अपनी योग्यता व रुचि से राजनीति में स्थान प्राप्त कर पाएगी राजनीतिक संस्कृति व राजनीतिक आधुनिकीकरण [illegible] जाएगी, हमारा लोकतंत्र व्यापक अर्थ में गणतंत्र होगा, और तब प्रक्रियात्मक व प्रतिनिधित्वात्मक लोकतंत्र में भेद भी समाप्त हो जाएगा।

[illegible] सूची

1. https://eci.gov.in/statistical-report
2. [illegible] टाइम्स, 24 मई, 2019 "17वीं लोकसभा में सर्वाधिक महिला सांसद
3. [illegible], भारत में महिला सशक्तिकरण, आविष्कार डिस्ट्रीब्यूटर्स
4. [illegible], महिला राजनीतिक नेतृत्व एवं महिला विकास' पोइंटर पब्लिशर्स, जयपुर 2011
5. वही
6. राजस्थान की राजनीति में महिलाएं (राजस्थान विधानसभा के विशेष संदर्भ में) "विधान-बोधनी" त्रैमासिक पत्रिका, राजस्थान विधानसभा सचिवालय, जनवरी-अप्रैल, 2017
7. वही
8. सदस्य परिचय (चौदहवीं राजस्थान विधानसभा): राजस्थान विधानसभा सचिवालय द्वारा जारी।
9. वही
10. [illegible] व [illegible], आविष्कार पब्लिशर्स, जयपुर 2010
11. [illegible], पोइंटर पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2012
12. [illegible], RJPP, 2017 Vol 15
13. [illegible], विधान बोधनी, राजस्थान विधानसभा सचिवालय, जनवरी-अप्रैल 2017
14. https://rajassembly.nic.in
15. वही
16. वही
17. वही

सन्दर्भ सूची

1. मित्रा, मोहित (1993), ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन जर्नलिज्म, कलकत्ता : नेशनल
2. घोष, सुबीर (1991), मास मीडिया टुडे : इन द इण्डियन कन्टवस्ट, कलकत्ता : प्रो
3. नटराजन, एस. (1962), ए हिस्ट्री ऑफ द प्रेस इन इण्डिया, नई दिल्ली : एशिया
4. बोहरा, एन.एन. (2009), भारत की बीसवीं सदी, नई दिल्ली : नेशनल
5. आर.एन.आई. की रिपार्ट, भारत सरकार, नई दिल्ली
6. वार्षिक रिपोर्ट, सूचना एवं प्रसारण विभाग, भारत सरकार।
7. ऑडिट ब्यूरो ऑफ सर्कुलेशन, प्रतिवेदन 2017

सहायक आचार्य, राजनीति वि
राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपु
ईमेल : bdbarahth@g